फुफ्फा चिल्लाए कि जोगियापुरा में फाड़ी जा रही है चड्ढी

Written by कुमार सौवीर
Sunday, 10 June 2018 15:35

: भाईजारापार्टी के महामंत्री के इशारे पर डण्ठल बाबू ने उनकी चड्ढी में तेजाब डाल दिया : क्वेरी हुई कि सोयल बाबू ने 25 लाख रूपयों की तेल की शीशी क्यों मांगी, क्या इस्तेमाल करेंगे, किस पर प्रयोग होगा : ढिबरीदीन के गेस्टॉपो में फत्ते को नमाज की शैलियां सिखानी शुरू हुई। पहले ही प्रयास में आह, फिर वाह :

कुमार सौवीर

लखनऊ : सचिवालय के आसपास आज दोपहर अचानक ही डुगडुगी बजने से लोग चौंक गये। साथ में ही गगनचुम्बी नारों पर टंकार सुनायी पड़ने लगी। संगत में थे चिमटा, डमरू और खड़ताल, झमाझमा बजना शुरू हो गया। पता चला कि राजभवन के आसपास से यह जुलूस निकला है और सचिवालय के आसपास पहुंच गया है। जब मजमा जोरदार जुट चुका, तो माइक लेकर फलाने ने ऐलान कर दिया कि जोगियापुरा में फत्ते की चड्ढी कमलीवाले लोगों ने सुलगाकर छेददार बना डाली है। हाय हाय। फलाने का निष्कर्ष था कि कमल की यह चड्डी अब चड्ढी नहीं रही, बल्कि बिलकुल जाली बन गयी है, छलनी बन गयी है। जहां 72 नहीं, बल्कि अब तो बेशुमार छेद दिख रहे हैं। हवा, पानी, मच्छर, कीड़ा-मकौड़े आराम से आ-जा रहे हैं, जैसे एक्सप्रेस-वे पर हों। इस चड्ढी में जो भी रख दो, वह या तो उड़ जाता है, गिर जाता है या फिर टपक जाता है। पहनने का औचित्य ही बेमतलब हो गया है। पहनना या नहीं पहनना के बीच का फर्क भी गुम हो गया है। चड्ढी शब्द में जितने भी अक्षर हैं, सब छनछनाकर बिखरे जा रहे हैं।

बीच बाजार हंगामा हुआ तो खोजबीन शुरू हो गयी। पता चला कि फत्ते मूलत: कमलपुरम के रहने वाले हैं, और उनको जोगियापुरा के कुछ काली-कमली वालों ने फंसा कर बर्बाद कर दिया है। दरअसल, फत्ते ने अपने बुढ़ऊ फलाने फुफ्फा से शिकायत की कि वे अपनी अलगनी पर चड्ढी सुखा रहे थे। इसी बीच भाईजारापार्टी के कुछ लोगों ने मना किया, बोले कि अगर अपनी चड्ढी सुखा कर उसमें बैक्टीरिया खत्म करना है, तो 25 लाख की आने वाली सुगंधित तेल की शीशी लेकर आना पड़ेगा। फत्ते के पास इतनी हैसियत नहीं थी, तो उन्होंने मना कर दिया। इस पर भाईजारापार्टी के महामंत्री उनील कंसल बाबू के इशारे पर सोयल बाबू ने उनकी चड्ढी में तेजाब डाल दिया। अब जब अनजाने में फत्ते ने उसे पहना, तो वह बुरी तरह कनकना पड़ा। मारे तेजाबी गरमी के, पूरा गुप्तांग झुलस गया।

1 / 3

Written by कुमार सौवीर
Sunday, 10 June 2018 15:35

यह शकियत सुनते ही बुढऊ फ्लाने फुफ्फा का अंग-अंग फुंक गया। उनकी सलाह पर ही फत्ते ने ईमेल से फ्लाने फुफ्फा के पास शकियत भेज दी। अब फ्लाने फुफ्फा चूंकि नागपुर में प्रशक्षिति हैं, इसलि उन्होंने फत्ते की शकियत पर पूरा ब्योरा-खर्रा लिख कर जोगयिापुरा के मुखयिा को एक चट्ठी रजिस्टर्ड डाक में पोस्ट-ऑफिस को भेजी थी। यह भी दर्ज कर दिया कि डण्ठल बाबू 25 लाख रूपयों की तेल की शीशी क्यों मांग रहे हैं, उसका क्या इस्तेमाल करेंगे, किस पर प्रयोग किया जाएगा, वगैरह-वगैरह। वह ढमाके के आफिस पहुंची तो जरूर, लेकिन ढमाके के आफिस में किसी साजशि की तहत जोगयिापुरा सचविालय के दफ्तर की दराज से किसी ने चुपके से निकाल लिया है।

हालांकि कहने वाले लोग यहां तक भी कहते हैं कि अमति-टोला के उनील कंसल बाबू के इशारे पर ही जोगयिापुरा में पूरा गैंग-संचालति होता है। जोगयिापुरा-गैंग के मुखयिा है सोयल बाबू। और जोगयिापुरा-टोला में जतिने लोग हैं, उनमें से ज्यादातर लोग उनील कंसल बाबू के इशारे पर हैं। अमति-टोला के गज्जू-बाबू ने ही उनील कंसल को वहां का जंगल-सेक्रेटरी अधकिृत किया है। अब चूंकि जोगयिापुरा के मूल नविासियों को उनील बाबू की अति-सक्रयिता नापसंद है, इसलि उन्होंने ही यह पत्र चुपके से उठाया है, और जनसाधारण के विचार-वमिर्श हेतु उसकी फोटोकॉपी करवा कर वायरल कर दिया है।

यह पता चलते ही कंसल बाबू की कमलनिी जैसी पत्तयिां एकदम से भक्क से सुलग गयीं। उन्होंने जोगयिापुरा के दारोगा ढबिरीदीन को बुलाया। मजेदार बात यह कि ढबिरीदीन कहने को तो जोगयिापुरा में तैनात है, लेकिन असल में वह है अमति-टोला के उनील कंसल का खासुलखास। काम फन्नेदार करता है। ढबिरीदीन को खूब पता है कि फत्ते कहां मलिेगा, उसकी नस किधर है, डण्डा कहां से आयेगा, प्रवेश-द्वार किधर है, किस पर तरह को नमाज की शैली में झुकाया जाता है। ढबिरीदीन को खूब पता है। दारोगा है तो क्या हुआ, उसे कानून-शानून से तो कोई मतलब ही नहीं होता है। अरे घाट-घाट का पानी पयिे हुए है यह ढबिरीदीन।

तो भइया, उसने गोल्डेन-चैरयिट मंगवाया, जसिमें पचासों सारथी जुते हुए थे। यह स्वर्ण-रथ पूरे सम्मान के साथ फत्ते के घर पहुंचा। सारथयिों ने बनिा पूछे-ताछे फत्ते को अपने कंधे पर ऐसे टांग लिया जैसे फत्ते जी सीधे ओलम्पकि में गोल्ड-मैडल जीत कर लौटे हों। पब्लकि जयजयकारा लगाती ही रही, और ढबिरीदीन ने अपने गेस्टॉपो में फत्ते को नमाज की शैलयिां सखिानी शुरू कर दी। पहले ही प्रयास में ही आह की चीत्कार निकली, और उसके कुछ ही मनिट बाद ही वाह-वाह वाह-वाह की स्वर-लहरयिां बखिेरती कोयल की कूहू कूहू निकलने लगी। मौसम सुखद हो गया। जो बौर आम पर भराभर गया था, वह पके आम में तब्दील हो गया।

फत्ते सम्पूर्ण वश्रिाम के लि अज्ञात-स्थान की ओर प्रस्थान कर गया, जबकि ढबिरीदीन ने डण्डा दूर फेंक दिया। उसका इस्तेमाल आखरि करते भी ढबिरीदीन, तो क्या करते। उसमें थोड़ी गंदगी जो लग चुकी थी न, इसलि।

□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□:-

[□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□, □□□□□□□ □□□□□□□](#) □□

[□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□, □□□ □□□□□□□□□ □□□□□□](#) □□□ ["□□ □□□□□ □□"](#)

फुफ्फा चिल्‍लाए कि जोगियापुरा में फाड़ी जा रही है चड्ढी

Written by कुमार सौवीर
Sunday, 10 June 2018 15:35

यह पुलिस की गुंडागर्दी है, या गुंडों की पुलिसगिरी ? बिरादरी के लोगों के लिए न वकील जूझते हैं, न पत्रकार

3 / 3